पद्माकर का श्रृंगार रस निरूपण

डॉ. राजरानी शर्मा
एसोसिएट प्रोफ़ेसर
सत्यवती महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय
ईमेल आई.डी.– rajrani@satyawati.du.ac.in

,

रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं– लक्षण–ग्रंथ, श्रृंगारिकता और आलंकारिकता। रीतिकाल में श्रृंगार वर्णन करने वाले कवियों को भी तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है– लक्षण–ग्रंथों के रूप में जिन्हें रीतिबद्ध काव्य भी कहा जाता है, लक्ष्य ग्रंथों के रूप में जिसे रीतिसिद्ध काव्य कहा जाता है और साधारण काव्य के रूप में जिसे रीतिमुक्त काव्य भी कहा जाता है।

पद्माकर कवि और आचार्य दोनों हैं। इनके 'जगद्विनोद' और 'पद्माभरण' लक्षण ग्रंथ हैं जिनमें क्रमशः रस और अलंकारों का निरूपण है। रसों में 'श्रृंगार रस' का निरूपण विस्तारपूर्वक किया गया है शेष रसों का निरूपण संक्षिप्त–सा करके बस खानापूर्ति कर दी गई है। जिस समय पद्माकर ने लेखन आरंभ किया तब राजसी जीवन आकंठ विलासिता में डूबे हुए थे। पद्माकर के छंदों में भी इस वैभव के ठाट–बाट की झलक (गुलगुली गिल में गुल है गलीचा है) मिल जाती है। पद्माकर तक आते–आते श्री कृष्ण और राधिका आराध्य ना रहकर सामान्य नायक–नायिका बन गए थे। पद्माकर पर तत्कालीन दरबारी संस्कृति का भी बहुत प्रभाव पड़ा था परिणामस्वरूप उनकी काव्य–शैली पर अरबी–फारसी की छाप दृष्टिगत होती है। 'पद्माभरण' में कई स्थानों पर 'दिल में आग लगाई गई है' और 'जगद्विनोद' में कहीं कलेजा निकालने की चर्चा है तो कहीं 'तड़पने' और 'आहें भरने' की बात है।

पद्माकर ने रस का निम्नलिखित लक्षण दिया है–

''मिली भाव अनुभाव अरू संचारिन के बृंद

Copyright ⓒ 2020 Authors

परिपूरन थिर भाव जो सु रसरूप आनंद''[प]

आगे चलकर उन्होंने श्रृंगार रस का यह लक्षण दिया–

''सो सिंगार द्वै भाँति को दंपति मिलन संजोग
अटक जहाँ कछु मिलन को सो सिंगार–वियोग''[पप]

पारंपरिक लक्षण है कि श्रृंगार रस के दो भेद हैं– संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार। 'जगद्विनोद' में पद्‌माकर द्वारा निरूपित श्रृंगार रस का निष्कर्ष निम्नलिखित है–

1. रति नामक स्थायी भाव पुष्ट होने से श्रृंगार रस व्यंजित होता है।
2. श्रृंगार रस के आलंबन नायक–नायिका और उद्दीपन विभाव सखा–सखी मेघ, उपवन, नौका विहार, चाँदनी रात, हाव–भाव, मृदु मुस्कान आदि हैं।
3. श्रृंगार रस के नौ अनुभाव और उन्मादादि संचारी भाव हैं।
4. श्रृंगार रस का देवता श्री कृष्ण है और इसका वर्ण श्याम है तथा यह रसराज भी है।
5. श्रृंगार रस के नौ अनुभाव भी माना जाता है आठ तो परंपरा प्रसिद्ध हैं पद्‌माकर ने 'जृंभा' नामक नवाँ अनुभाव भी माना जाता है। (छंद 399)

संयोग श्रृंगार–वर्णन

''कल कुंडल जहँ डुलत खुलत अलकावलि बिलुलित
स्वदेसीकरन मृदित तनक तिलकावलि सुललित
सुरतमध्य अति लसत हरष हुलसत चरव चंचल
पद्‌माकर झपी उझपि उझपि झपि रहत वृगंचल
नित सो विपरीत सुरति समय अस मुख सुखसाधक जु सब
हरिहर बिरंचिपुर उरगपुर सुरपुर लै कह आज अब।''[पपप]

Copyright ⓒ 2020 Authors

यहाँ पर नायक—नायिका आलम्बन हैं। कुंडलों का डुलना, बालों का खुलना, चंचल दृगों के प्रसन्न होने से भ्रू निक्षेपादि का व्यंजित होना आदि उद्दीपन हैं। मन का मुकुलित होना मानसिक अनुभाव है, 'स्वद्, कंप सात्विक अनुभाव हैं', हर्ष, चपलता तथा अवहित्या आदि संचारी भाव हैं, 'दृंगचल' कायिक अनुभाव होकर नारी सुलभ लज्जा को भी अभिव्यक्त कर रहा है। अतः इस छंद में श्रृंगार रस का पूर्ण परिपाक हुआ है।

संयोग श्रृंगार का एक उदाहरण और दिया है—

''पिय तिय के तिय पीय के नखसिख साजि सिंगार
करी बदलो तन मनहु को दंपति करत बिहार''[पअ]

दंपति आलम्बन विभाव है, एकांत स्थान उद्दीपन विभाव है। नख से शिख तक श्रृंगार आहार्य अनुभाव है, 'लीला' तथा 'विलास' हाव हैं, 'हर्ष' आदि संचारी भाव है, 'विहार' शब्द से मिलन का संकेत है। अतः इस दोहे में रति नामक स्थायी भाव का श्रृंगार रस में पूर्ण परिपाक हुआ है।

'जगद्विनोद' में संयोग श्रृंगार के इस निरूपण के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर भी संयोग श्रृंगार का विवेचन है। जैसे—

1. वृंदावन बीपिन बिलोकन गई ही जहाँ, राजत रसाल बन तारूतमाल को। (छंद संख्या 112, मुदिता नायिका का उदाहरण)
2. आस सों आरत सम्हारत न सीस पट, गजब गुजारत गरीवन की धार पर (छंद संख्या 124, गणिका का उदाहरण)
3. रीति विपरीति रची दंपति गुपति अति (छंद संख्या 48, प्रौढ़ा नायिका का उदाहरण)
4. रीति रची विपरीति रची रति प्रीतम संग अनग झरी मैं (छंद संख्या 53, प्रौढ़ा नायिका के आनन्द सम्मोहिता भेद का उदाहरण)

वियोग श्रृंगार— पद्माकर ने विप्रलम्भ श्रृंगार का यह लक्षण दिया—

''जहै वियोग पिय तीय को दुखदायक अति होत,

 Copyright ⓒ 2020 Authors

बिप्रलंभ सिंगार सो कहत कबिन के गोत''अ

जहाँ प्रिय–प्रिया का दुखदायी बिछोह हो वहाँ वियोग श्रृंगार होता है।

''सुभ सीतल मंद सुगंध समीर कछू छल छंद से छ्वै गए हैं
पद्माकर चाँदनी चंदहु वे कछु औरही डौरन वै गए हैं
मनमोहन सों बिछुरे इत ही बनिकै न अब दिन द्वै गए हैं
सखि ये हव वे तुम वेई बने पै कछू के कछू मन ह्वै गए हैं''अप

नायिका अपनी सखी से बिछोह का वर्णन कर रही है। शीतल मंद सुगंध पवन तथा चाँदनी उद्दीपन विभाव हैं। प्रिय मिलन के समय सुखद लगने वाली सभी वस्तुएँ विरह में दुखदायी प्रतीत होने लगते हैं। 'मन का फिर जाना' मानसिक अनुभाव है तथा विषादादि संचारी भाव हैं।

पद्माकर ने वियोग श्रृंगार के तीन भेद किए–पूर्वानुराग मान और प्रवास (छंद संख्या–626 जगद्विनोव)

''मोहि तजि मोहनै मिल्यो है मन मेरो दौरि
नैन हू मिले हैं देखि देखि सांवरो शरीर
कहे पद्माकर क्यों तानमय कान भये
हौं तो रही जकि थकि भूली–सी भ्रमी बीर
एतो निरमई दई इनकों दया न पई
ऐसी दसा भई मेरी कैसे तन धारौं धीर
होवै मनहू के मन नैनन के नैन जो पै
कानन के कान तौ ये जानते पराई पीर''अपप

श्री कृष्ण के प्रथम दर्शन से ही गोपी के हृदय में प्रेमांकुर उत्पन्न हो गए हैं। बांसुरी की ध्वनि उद्दीपन विभाव है। जकी सी, थकी–सी, भूली–सी, भ्रमी–सी वीर अनुभाव हैं। अतः पूर्व अनुराग, विप्रलम्भ श्रृंगार के अन्तर्गत पूर्णतः परिपुष्ट है।

Copyright ⓒ 2020 Authors

मान की अवस्था में नायक नायिका शारीरिक रूप से निकट रहने पर भी मानसिक रूप से निकट नहीं होते। पद्माकर ने मान के तीन भेद किए– लघु, मध्यम और गुरू (छंद संख्या–632)। प्रवास के भी दो भेद उन्होंने माने हैं– भविष्य और भूत (छंद संख्या–643) पद्माकर ने वियोगावस्था के वर्णन के अन्तर्गत निम्नलिखित दशाओं के नाम गिनाए–

''इक वियोग सिंगार मैं इती अवस्था थाप।
अभिलाषा गुनकथन पुनि पुनि उदबेग प्रलाप।
चिंता स्मृति उनमाद पुनि जड़ता ब्याधि बखान।
मरन जु रस सिंगार में बरनत नहीं सुजान।''[अपपप]

अभिलाषा, गुणकथन, उद्वेग, प्रलाप, चिंता, स्मृति, उन्माद जड़ता और व्याधि वियोगावस्थाएँ हैं किन्तु पद्माकर ने इन नौ अवस्थाओं के नाम देने के बावजूद उदाहरण पाँच ही अवस्थाओं के दिए हैं– अभिलाषा, गुणकथन, उद्वेग, प्रलाप और मूर्च्छा।

उद्दीपन विभाव का वर्णन– पद्माकर ने उद्दीपन विभावान्तर्गत सखा, सखी, दूती, वन, उपवन षट्ऋतु, पवन, चाँद, चाँदनी, पुष्प, पराग आदि का वर्णन किया है। (छंद संख्या–335, 336, 337) पद्माकर ने चार प्रकार के सखाओं के लक्षण– उदाहरण दिए हैं– पीठमर्द बिट, चेट और विदूषक। सखी के भेद न बताके उनके कार्यों, मण्डन, शिक्षा, उपालम्भ और परिहास का वर्णन मिलता है।

पद्माकर ने दूती का निम्नलिखित लक्षण दिया और उनके तीन भेद किए–

''दूतपने ही में सदा जो तिय परम प्रबीन
उत्तम मध्यम अधम है सो दूती बिधि तीन''[पग]

दूतियों के दो कार्य हैं विरहनिवेदन और संघट्टन उद्दीपन विभाव के अन्तर्गत पद्माकर ने षट्ऋतु वर्णन किया है जिसमें तत्कालीन विलासी वातावरण, वैभव–ऐश्वर्य का प्रदर्शन और कामुकता बढ़ाने के सभी उपादनों का चित्रण है–

''तान तुक ताला है, विनोद के रसाला है

 Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

सुबाला है दुसाला है बिसाला चित्रसाला है।''

''गजक अंगूर की अंगूर से उचौहैं कुच

आसव अंगूर को अंगूर ही की टाटी है।''[ग]

इस निरूपण के अतिरिक्त पद्माकर ने अन्य लक्षणों के उदाहरण के रूप में भी ऋतुओं का वर्णन किया है विशेषतः होली और फाग में उनका मन खूब रमा है क्योंकि तत्कालीन विलासिता पूर्व वातावरण में नायक–नायिका का होली खेलने का उत्तेजनापूर्ण वर्णन उपयुक्त ही था। पद्माकर का होली वर्णन तो अद्भुत बिम्बात्मकता, चित्रात्मकता और नाद सौन्दर्य की विशेषताओं से युक्त है चाहे वह 'फाग के भीर अमीरन में' पद हो या 'लवंगन की लोनी लता' काला छंद हो।

<u>अनुभाव, हाव तथा संचारी भाव का वर्णन–</u> पद्माकर ने आठ प्रचलित अनुभाव और नवाँ 'जृभा' उनकी नवीन उद्भावना है। पारम्परिक आठ सात्विक भावों में– स्तम्भ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कंप, वैवर्ण्य, अश्रु, प्रलय का निरूपण है। उन्होंने 'जृंभा' का लक्षण दिया–

''पिय बिछोह संमोह कै आलस ही अवगाहि

छिन इक बदन बिकासिबो जृंभा कहिये ताहि''[गप]

मदमरी नायिका, रति से श्रान्त होकर आलज्य जे पूर्ण दिखे वहाँ जृंभा अनुभाव होता है–

''दर दर दौरति दसनदुति, सुभ सुगंध सरसाति

लखत क्यों न आलसभरी परी तिया जमुहाति''[गपप]

पद्माकर ने परम्परागत दस हावों– लीला, बिलास, विच्छिति, विभ्रम्, किलाकिचिंत, ललित, मोदृायित, बिब्बोक, विहृरत, कुट्टमित का लक्षण– उदाहरण सहित वर्णन किया है। उसी प्रकार परम्परागत तैंतीस संचारी भावों का ही निरूपण है।

<u>नायिका–भेद–</u> पद्माकर ने नायिका का निम्नलिखित लक्षण दिया–

''रस–सिंगार को भाव उर उपजत जाहि निहारि

Copyright ⓒ 2020 Authors

ताही को कवि नाइका बरनत विविधि बिचारि''गपपपप

अर्थात् जिस रमणी को देखकर हृदय में श्रृंगार रस का भाव जागृत हो उसे नायिका कहते है। पद्माकर द्वारा निरूपित नायिका–भेद संक्षेप में इस प्रकार है–

1. त्रिविध नायिका– स्वकीया, परकोया और गणिका
2. अवस्था के आधार पर स्वकीया के तीन भेद– मुग्धा, मध्या प्रौढ़ा
3. मुग्धा के दो भेद– अज्ञातयौवना और ज्ञातयौवना तथा आगे ज्ञातयौवना के दो भेद– नवोढ़ा और विश्रब्ध नवोढ़ा
4. प्रौढ़ा नायिका के दो भेद– रतिप्रिया और आनंद सम्मोहिता
5. मध्या और प्रौढ़ा के तीन–तीन भेद– धीरा, अधीरा, धीरा धीरा
6. पति प्रेम के आधार पर दो भेद– ज्येष्ठा और कनिष्ठा
7. परकीया के दो भेद– ऊढ़ा और अनूढ़ा
8. षट्विध परकीया– गुप्ता (भूत, वर्तमान, भविष्य), विदग्धा (क्रिया, वचन), लक्षिता, कुलटा, मुदिता और अनुशयना (पहली, दूसरी और तीसरी)
9. उपर्युक्त समस्त नायिकाओं के तीन–तीन भेद– अन्यसुरति दुखिता, मानिनी, गर्विता (प्रेमगर्विता और रूपगर्विता)
10. दशा के आधार पर भेद– प्रोषितपतिका, खण्डिता, कलहांतरिता, विप्रलब्धा, उत्कंठिता, वासकसज्जा, स्वाधीनपतिका, अभिसारिका, प्रवत्स्यतप्रेयसी, और आगतपतिका
11. दशाआधारित भेदों के पाँच–पाँच भेद और किए गए है जैसे मुग्धा प्रोषितपतिका, मध्या प्रोषितपतिका, प्रौढ़ा प्रोषितपतिका, परकीया प्रोषितपतिका और गणिका प्रोषितपतिका
12. अभिसारिका के इन पाँच के अतिरिक्त तीन भेद और किए हैं– दिवा अभिसारिका, शुक्ला अभिसारिका और कृष्णा अभिसारिका
13. नायिकाओं के अन्य भेद– उत्तमा, मध्यमा और अधमा (छंद संख्या 11 से लेकर 280 तक जगद्विनोद)

 Copyright ⓒ 2020 Authors

उपर्युक्त निरूपण का आचार्यत्व भले ही मौलिक न हो किन्तु उदाहरण पक्ष बहुत व्यावहारिक, मधुर और नवीन है–

''जाहिरै जागत सी जमुना जब बूड़ै बहै उमहै वह बैनी
त्यों पद्माकर हीर के हारन गंग तरंगन को सुखदैनी
पाइन के रंग सो रंगि जात–सी भाँति ही सरस्वति सैनी
पैरे जहाँई जहाँ ब्रजबाल तहाँ तहाँ ताल में होत त्रिबेनी''[गपअ]

अर्थात् नायिका यमुना नदी में स्नान के लिए उतरती है तो हीरो की हार की उज्ज्वलता से गंगा की श्वेतिमा का आभास होता है, पावों की लालिमा से सरस्वती नदी की अनुभति होती है। ऐसा प्रतीत होता है कि नायिका के पानी में उतरते ही मानो त्रिवेणी का संगम हो गया हो।

नायक–भेद– आलम्बन विभाव के अन्तर्गत ही नायिका के साथ–साथ नायक–भेद निरूपण भी किया है। उन्होंने नायक का यह लक्षण दिया है–

''सुन्दर गुनमंदिर जुवा जुवर्ति बिलौकें जाहि
कविता राग रसज्ञ जो नायक कहिये ताहि''[गअ]

नायक सुन्दर, युवा, कला–प्रेमी, रसज्ञ और युवतियों को अपनी ओर आकृष्ट करने में समर्थ होना चाहिए। पद्माकर ने नायक–भेद की निम्नलिखित निरूपण किया है–

1. विधिपूर्वक विवाहिता स्त्री के पति– पति, उपपति और बैसिक
2. नायक के अन्य भेद– अनुकूल, दक्षिण, शठ और धृष्ठ
3. नायक के अन्य त्रिविध भेद– मानी, वचन, चतुर और क्रिया चतुर। ये तीनो भेद कामशास्त्र के अनुकूल हैं।
4. आगे प्रोषितपति और अनभिज्ञ नायक के लक्षण– उदाहरण के साथ ही नायक–भेद निरूपण समाप्त हो जाता है। (छंद संख्या 281 से 321 तक)

 Copyright ⓒ 2020 Authors

निष्कर्षतः पद्माकर का श्रृंगार रस निरूपण में लक्षण दो है– छंद में और उदाहरण कवित्त और सवैया छंद में दिए गए है। पद्माकर का श्रृंगार–रस वर्णन देव की अपेक्षा मतिराम से प्रभावित है। यदि मौलिक उद्भावना की चर्चा की जाय तो उनके द्वारा वर्णित 'जृंभा' नामक अनुभाव नवीन है जिसका वर्णन पूर्ववर्ती आचार्यों ने नही किया। पद्माकर का श्रृंगार वर्णन कामशास्त्र से प्रभावित है। सभी नायिकाओं में पद्माकर ने स्वकीया प्रेम को श्रेष्ठ बताया है। कुल मिलाकर आचार्यत्व की दृष्टि से रीतिकालीन कवि–आचार्यों के पास नया कहने को कुछ बचा नहीं था परन्तु पद्माकर, देव मतिराम आदि कवि उदाहरणों के कवित्व की वजह से अत्यन्त प्रसिद्ध हैं।

संदर्भ ग्रन्थ–पद्माकर ग्रन्थावली
संपादकः विश्वनाथ प्रसाद मिश्र – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी

---

[i] जगद्विनोद, छंद संख्या–608, पृष्ठ–207

[ii] जगद्विनोद, छंद संख्या–614, पृष्ठ–208

[iii] जगद्विनोद, छंद संख्या–619, पृष्ठ–208

[iv] जगद्विनोद, छंद संख्या–620, पृष्ठ–209

[v] जगद्विनोद, छंद संख्या–621, पृष्ठ–209

[vi] जगद्विनोद, छंद संख्या–622, पृष्ठ–209

[vii] जगद्विनोद, छंद संख्या–629, पृष्ठ–211

[viii] जगद्विनोद, छंद संख्या–649–650, पृष्ठ–215

[ix] जगद्विनोद, छंद संख्या–361, पृष्ठ–157

[x] जगद्विनोद, छंद संख्या–384, 391, पृष्ठ–163, 165

[xi] जगद्विनोद, छंद संख्या–422, पृष्ठ–171

[xii] जगद्विनोद, छंद संख्या–424, पृष्ठ–171

[xiii] जगद्विनोद, छंद संख्या–11, पृष्ठ–81

[xiv] जगद्विनोद, छंद संख्या–13, पृष्ठ–81

 Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

[xv] जगद्विनोद, छंद संख्या–281, पृष्ठ–142

Copyright ⓒ 2020 Authors